वर्तमान भौतिकवादी युग में सामाजिक नैतिकता का अर्थ एवं इसकी उपयोगिता

ममता कुमारी
डॉ0 गौतम कुमार सिन्हा

साधारण भाषा में यह कहा जा सकता है कि परिवार, समाज व समूह के नैतिक नियमों का अनुपालन करना ही नैतिकता है। नैतिकता के अंतर्गत समाज द्वारा निर्धारित व्यवहार और आदर्श आते हैं। हमारे सभी प्रकार के कार्य आचरण और व्यवहार का संबंध नैतिकता से ही होता है। अतः नैतिकता का सामान्य अर्थ या अभिप्राय सामाजिक समूह के द्वारा बनाये गये नैतिक नियमों को स्वीकार करने से और पालन करने से है जो हमें परम्पराओं से प्राप्त होते रहता है। नीति–शास्त्र को नैतिकता का शास्त्र भी कहा जाता है। अतः यह हमें उचित, अनुचित, अच्छा बुरा तथा हमें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, इस ज्ञान के संदर्भ में उचित आचरण की ओर इंगित करता है। जे.एन सिन्हा ने नीतिशास्त्र के स्वरूप तथा विधि के उपर प्रकाश डालते हुए लिखा है :

अतः हमारे नैतिक कर्म की अनुशंसा परिवार और समाज के द्वारा होना चाहिए। यह किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा बनाये नैतिक नियम नहीं होते हैं बल्कि इसके नियन्ता परम पुरूष, ऋषि मनिषी नीतीशास्त्री आदि होते हैं, अतः इनका पालन करना एक प्रकार की नैतिक बाध्यता होती है। आज की भौतिकता की दौड़ में नैतिकता को हर क्षेत्र में नजर अंदाज कर दिया गया है। समाज के हर वर्ग के लोग नैतिकता की अवहेलना कर रहे हैं।